

करणानुयोग

अध्याय 15. जैन भूगोल

1. लोक किसे कहते हैं ?

अनन्त आकाश के मध्य का वह अनादि व अकृत्रिम भाग जिसमें जीव आदि षट् द्रव्य रहते हैं, वह लोक कहलाता है।

2. लोक का आकार कैसा है ?

1. तीन गिलास लीजिए एक को उल्टा रखें, उसके ऊपर दूसरे गिलास को सीधा रखें एवं दूसरी गिलास के ऊपर तीसरे गिलास को उल्टा रखें यह जो आकार बनता है, वह लोक का आकार है।
2. यह लोक पुरुषाकार जैसे-एक पुरुष जो दोनों पैर फैलाकर कटि पर दोनों तरफ एक-एक हाथ रखकर खड़ा है, यह जो आकार बनता है, वह लोक का आकार है।
3. मिस्र देश के गिरजे में बने हुए महास्तूप से यह लोक का आकार किंचित् समानता रखता हुआ प्रतीत होता है। (जै. सि. को. 3/438)

3. लोक का विस्तार कितना है ?

लोक का विस्तार दक्षिणोत्तर दिशा में सर्वत्र 7 राजू मोटा (लम्बा) है। पूर्व-पश्चिम दिशाओं का विस्तार नीचे 7 राजू, ऊपर क्रम से घटता हुआ मध्य लोक में 1 राजू, पश्चात् क्रमशः बढ़ता-बढ़ता ब्रह्मलोक में 5 राजू, फिर क्रमशः घटता हुआ लोक के अंत में 1 राजू चौड़ा है। लोक की ऊँचाई कुल 14 राजू है। सम्पूर्ण लोक का घनफल 7 राजू का घन अर्थात् $7 \times 7 \times 7 = 343$ घन राजू है।

4. राजू किसे कहते हैं ?

1 हजार किलोग्राम भार का 1 गोला इन्द्र लोक से नीचे गिरकर 6 माह में जितनी दूरी तय करता है, वह 1 राजू है। यह आगम की परिभाषा है। सामान्य परिभाषा में असंख्यात योजन का एक राजू होता है।

5. अधोलोक कितने राजू में है एवं वहाँ कौन-कौन रहते हैं ?

अधोलोक 7 राजू में है। 6 राजू में सात पृथ्वी (नरक) हैं एक पृथ्वी से दूसरी पृथ्वी के बीच 1 राजू में कुछ कम असंख्यात योजन प्रमाण खाली आकाश है। इनमें सबसे ऊपर मेरु पर्वत की आधारभूत रत्नप्रभा नाम की पृथ्वी है जिसके तीन भाग हैं-खरभाग, पङ्कभाग और अब्बहुलभाग। खरभाग 16,000 योजन मोटा है, इसमें भवनवासी और व्यंतरों के आवास हैं। जिसमें असुरकुमार के अलावा 9 प्रकार के भवनवासी एवं राक्षस देवों के अलावा शेष 7 प्रकार के व्यंतर देव निवास करते हैं। पङ्क भाग 84,000 योजन मोटा है, इसमें भवनवासी देवों के असुरकुमार देव तथा व्यंतरों के राक्षस नामक देव निवास करते हैं। अब्बहुल भाग 80,000 योजन मोटा है, इसमें नारकी रहते हैं। इस प्रकार प्रथम पृथ्वी की मोटाई 1,80,000 योजन है, दूसरी शर्कराप्रभा पृथ्वी की मोटाई 32,000 योजन, तीसरी बालुकाप्रभा पृथ्वी की मोटाई 28,000 योजन, चौथी पङ्कप्रभा पृथ्वी की मोटाई 24,000 योजन, पाँचवीं धूमप्रभा पृथ्वी की मोटाई 20,000 योजन, छठवीं तमःप्रभा पृथ्वी की मोटाई 16,000 योजन एवं सातवीं महातमः प्रभा पृथ्वी की

मोटाई 8,000 योजन है एवं अन्तिम एक राजू में निगोद आदि पञ्चस्थावर रहते हैं, जिसे कलकला पृथ्वी कहते हैं। (त्रि.सा.,146-149)

6. लोक का आधार क्या है ?

घनोदधिवलय, घनवातवलय और तनुवातवलय लोक के आधार हैं। जैसे-चमड़ी शरीर को चारों ओर से घेरे रहती है या जैसे-छाल वृक्ष को चारों ओर से घेरे रहती है, वैसे ही ये तीनों वातवलय चारों ओर से लोक को घेरे हुए हैं। लोक के नीचे तथा दोनों पार्श्व भागों में नीचे से एक राजू की ऊँचाई तक अर्थात् जहाँ तक पञ्च स्थावर रहते हैं एवं सातों भूमियों (नरकों) के नीचे एवं ईषत्प्राग्भार नामक आठवीं पृथ्वी के नीचे तीनों वातवलय 20-20 हजार योजन मोटे हैं।

दोनों पार्श्व भागों में एक राजू के ऊपर सप्तम पृथ्वी (नरक) के निकट आठों दिशाओं में तीनों वातवलय क्रमशः 7, 5, 4 योजन मोटे हैं। फिर क्रमशः घटते हुए मध्य लोक की आठों दिशाओं में 5, 4, 3 योजन मोटे रह जाते हैं। फिर क्रमशः बढ़ते हुए ब्रह्मलोक की आठों दिशाओं में 7, 5, 4 योजन मोटे हो जाते हैं, फिर ऊपर क्रमशः घटते हुए लोकाग्र के पार्श्व भाग में 5, 4, 3 योजन मोटे रह जाते हैं। ये तीनों वातवलय लोक शिखर पर क्रमशः 2 कोस (4000 धनुष) 1 कोस (2000 धनुष) एवं 1575 धनुष मोटे रह जाते हैं। (ति. प., 1/273-276)

7. वातवलय किस रंग के हैं ?

घनोदधिवलय गोमूत्र के रंग का, घनवातवलय काले रंग की मूँग के समान एवं तनुवातवलय अनेक रंगों वाला है। (ति. प., 1/271-272)

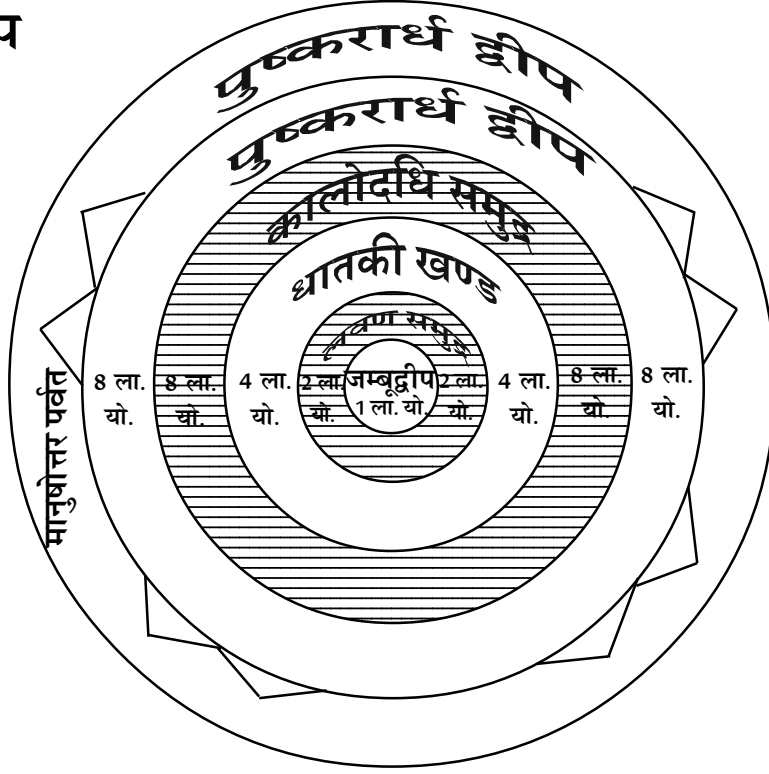
8. मध्यलोक का विस्तार कितना है ?

मध्यलोक एक राजू तिर्यक् (चारों ओर) फैला हुआ है और 1 लाख 40 योजन सुमेरु पर्वत के बराबर ऊँचा है। सुमेरु पर्वत की जड़ 1 हजार योजन जो चित्रा पृथ्वी में नींव के रूप में है। 99,000 योजन ऊँचा एवं 40 योजन की चोटी (चूलिका) है। इस मध्य-लोक में असंख्यात द्वीप और असंख्यात समुद्र एक दूसरे को घेरे हुए हैं। 1/2 राजू में स्वयंभूरमण समुद्र है एवं शेष 1/2 राजू में असंख्यात द्वीप व समुद्र हैं। मध्यलोक के बीचोबीच जम्बूद्वीप है, यह थाली के आकार का है। जिसका विस्तार 1 लाख योजन है, जम्बूद्वीप को घेरे हुए लवण समुद्र है, यह चूड़ी के आकार का है। इसका विस्तार 2 लाख योजन है। लवणसमुद्र धातकीखण्ड द्वीप से घिरा है, इसका विस्तार 4 लाख योजन है। धातकीखण्ड द्वीप कालोदधि समुद्र से परिवेष्टित है, इसका विस्तार 8 लाख योजन है। पुष्कर द्वीप, पुष्कर समुद्र से घिरा है। इसका विस्तार 16 लाख योजन है किन्तु बीच में मानुषोत्तर पर्वत पड़ जाने पर इसका विस्तार 8 लाख योजन है। जम्बूद्वीप के बाद का विस्तार दोनों तरफ लेना है, अतः $1+2+4+8+8+2+4+8+8=45$ लाख योजन है। इस अढ़ाई द्वीप में मनुष्य रहते हैं। मनुष्य इसके आगे नहीं जा सकते अतः इस पर्वत का मानुषोत्तर पर्वत नाम सार्थक है।

9. इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप क्यों पड़ा ?

जम्बूद्वीप के उत्तरकुरु में स्थित एक अनादिनिधन जम्बू का वृक्ष है, जिससे इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा। इसी प्रकार धातकीखण्ड के उत्तरकुरु में धातकी वृक्ष होने के कारण उस द्वीप का नाम धातकीखण्ड

अढ़ाईद्वीप



है। इसी प्रकार पुष्करद्वीप के उत्तरकुरु में पुष्कर वृक्ष होने के कारण उस द्वीप का नाम पुष्करद्वीप है।
(स. सि., 3/9/383)

10. जम्बूद्वीप को विभाजित करने वाले पर्वतों के क्या नाम हैं ?
हिमवन्, महाहिमवन्, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये छः पर्वत हैं। (तत्त्वार्थसूत्र, 3/11)
11. छः पर्वतों से सात क्षेत्र कौन से होते हैं ?
भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष ये सात क्षेत्र होते हैं।
12. छः पर्वतों पर कौन-कौन से तालाब हैं ?
पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक हैं।
13. इन तालाबों से कौन-कौन सी नदियाँ निकलती हैं ?
छः तालाबों से चौदह नदियाँ निकलती हैं।

पद्म से	- गङ्गा, सिन्धु और रोहितास्या।
महापद्म से	- रोहित, हरिकांता।
तिगिञ्छ से	- हरित, सीतोदा।
केसरी से	- सीता, नरकांता।
महापुण्डरीक से	- नारी, रूप्यकूला।
पुण्डरीक से	- सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तोदा। (तत्त्वार्थसूत्र, 3/20)

14. कौन-सी नदी किस समुद्र में मिलती है ?

गङ्गा, रोहित, हरित, सीता, नारी, सुवर्णकूला और रक्ता ये सात नदियाँ पूर्व लवण समुद्र में मिलती हैं। सिंधु, रोहितास्या, हरिकांता, सीतोदा, नरकांता, रूप्यकूला और रक्तोदा ये सात नदियाँ पश्चिम लवण समुद्र में मिलती हैं। (तत्त्वार्थसूत्र, 3/21)

15. इन नदियों की सहायक नदियाँ कितनी-कितनी हैं ?

गङ्गा-सिन्धु की	-	14000	रोहित-रोहितास्या की	-	28000
हरित-हरिकांता की	-	56000	सीता-सीतोदा की	-	112000
नारी-नरकांता की	-	56000	सुवर्णकूला-रूप्यकूला की	-	28000
रक्ता-रक्तोदा की	-	14000			

विशेष-प्रत्येक की एक सी अर्थात् गङ्गा की 14000 एवं सिन्धु की भी 14000 सहायक नदियाँ हैं। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए। (सर्वार्थसिद्धि, 3/23/410)

16. भरत क्षेत्र का विस्तार कितना है ?

भरत क्षेत्र का विस्तार $526 \frac{6}{19}$ योजन। (तत्त्वार्थसूत्र, 3/24)

17. अढ़ाई द्वीप में कितने आर्यखण्ड एवं म्लेच्छखण्ड हैं ?

अढ़ाई द्वीप में 170 आर्यखण्ड एवं 850 म्लेच्छखण्ड हैं।

18. अढ़ाई द्वीप में कितनी भोगभूमियाँ एवं कर्मभूमियाँ हैं ?

अढ़ाई द्वीप में 30 भोगभूमियाँ एवं 15 कर्मभूमियाँ हैं।

19. कर्मभूमियाँ, भोगभूमियाँ इतनी ही हैं कि और भी हैं ?

अढ़ाईद्वीप के बाद, अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप में स्थित नागेन्द्र पर्वत तक समस्त द्वीपों में जघन्य भोगभूमि हैं। किन्तु वहाँ मात्र तिर्यञ्च रहते हैं। नागेन्द्र पर्वत के परवर्ती स्वयंभूरमण द्वीप के शेष भाग और स्वयंभूरमण समुद्र में कर्मभूमि है। वहाँ भी मात्र तिर्यञ्च रहते हैं। (त्रिलोकसार, 323-324)

20. द्वीप समुद्रों का आकार कैसा है ?

जम्बूद्वीप थाली के आकार का है, इसके बाद सभी द्वीप और समुद्र चूड़ी के आकार के हैं।

21. मध्यलोक को तिर्यक् लोक क्यों कहते हैं ?

स्वयंभूरमण पर्यन्त असंख्यात द्वीप, समुद्र तिर्यक्-समभूमि पर तिरछे व्यवस्थित हैं, अतः इसको तिर्यक्लोक कहते हैं। (राजवार्तिक, 3/7 उत्थानिका)

22. ज्योतिषी देव किन्हें कहते हैं ?

सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारे ये पाँच प्रकार के देव ज्योतिर्मय हैं। प्रकाश करने का ही स्वभाव होने से इन देवों की ज्योतिषी देव यह संज्ञा सार्थक है। (सर्वार्थसिद्धि, 4/12/465)

23. सूर्य-चन्द्रमा क्या हैं ?

सूर्य-चन्द्रमा ज्योतिषी देवों के विमान हैं। सूर्य बिम्ब में आतप नामकर्म का उदय है जो मूल में शीतल एवं उसकी प्रभा (किरणें) गर्म होती हैं तथा चन्द्रबिम्ब में उद्योत नामकर्म का उदय है, जो मूल में भी शीतल एवं उसकी प्रभा भी शीतल है। ज्योतिषी देवों के विमान पृथ्वीकायिक के होते हैं। (क.का., 33)

24. ज्योतिषी देवों का आवास कहाँ-कहाँ पर है ?

ये देव चित्रा पृथ्वी से 790 योजन की ऊँचाई से लेकर 900 योजन की ऊँचाई तक अर्थात् 110 योजन में निवास करते हैं एवं एक राजू तिर्यक् घनोदधि वलय तक फैले हैं।

790 योजन ऊपर ताराएँ

इससे 10 योजन (800 योजन) ऊपर सूर्य (32 लाख मील ऊपर)

इससे 80 योजन (880 योजन) ऊपर चन्द्रमा

इससे 4 योजन (884 योजन) ऊपर नक्षत्र

इससे 4 योजन (888 योजन) ऊपर बुध

इससे 3 योजन (891 योजन) ऊपर शुक्र

इससे 3 योजन (894 योजन) ऊपर गुरु

इससे 3 योजन (897 योजन) ऊपर मङ्गल (अङ्गारक)

इससे 3 योजन (900 योजन) ऊपर शनि (मंदगति)

110 योजन

बुध और शनिश्चर के अंतराल में अवशिष्ट 83 ग्रहों की नित्य नगरियाँ अवस्थित हैं। (त्रि.सा., 332- 333)

नोट -

1. जैनदर्शन के अनुसार सूर्य यहाँ से 32 लाख मील दूरी पर है एवं विज्ञान के अनुसार 9 करोड़ 30 लाख मील दूरी पर है।
2. जैनदर्शन के अनुसार चन्द्रमा यहाँ से 45 लाख 20 हजार मील दूरी पर है एवं विज्ञान इसे मात्र 2 लाख 40 हजार मील दूरी पर मानता है।

25. ज्योतिष्क विमान का पारस्परिक अंतर कितना है ?

ताराओं का जघन्य अंतर 1कोस का सातवाँ भाग, मध्यम अंतर 50 कोस और उत्कृष्ट अंतर 1000 योजन है। सूर्य से सूर्य का और चन्द्र से चन्द्र का जघन्य अंतर 99,640 योजन है। उत्कृष्ट अंतर 1 लाख 660 योजन है। (राजवार्तिक, अ. 4/13/6)

26. चन्द्र, सूर्य आदि की कितनी-कितनी किरणें हैं ?

चन्द्रमा की 12,000 किरणें हैं वे शीतल हैं। सूर्य की भी 12,000 किरणें हैं किन्तु वे तीक्ष्ण (उष्ण) है। शुक्र की 2500 किरणें हैं, वे तीव्र अर्थात् प्रकाश से उज्वल हैं। शेष ज्योतिषी देवों की किरणें मंद प्रकाश वाली हैं। (त्रिलोकसार, 341)

27. ज्योतिषी देवों के विमान का आकार कैसा है ?

एक संतरा के दो खंड करके उन्हें ऊर्ध्वमुखी रखा जाए तो चौड़ाई वाला भाग ऊपर और गोलाई वाला थोड़ा-सा भाग नीचे रहता है, वैसे ही इन देवों के विमान होते हैं। हमें मात्र नीचे का भाग देखने में आता है। (त्रिलोकसार, 336)

28. ग्रहण क्या है ?

राहु का विमान चन्द्र विमान के नीचे और केतु का विमान सूर्य विमान के नीचे गमन करता है। प्रत्येक छः

माह बाद पर्व के अंत में अर्थात् पूर्णिमा और अमावस्या के अंत में राहु चन्द्रमा को और केतु सूर्य को आच्छादित करता है, इसी का नाम ग्रहण है। (त्रिलोकसार, 339)

29. अढ़ाई वर्ष में एक माह कैसे बढ़ता है ?

सूर्य के गमन की 184 गलियाँ हैं, एक गली से दूसरी गली दो योजन दूरी पर है, जिसे पार करने में एक मुहूर्त लगता है, अतः 30 दिन में 30 मुहूर्त (1 दिन) बढ़ जाता है, इसी प्रकार वर्ष में 12 दिन एवं अढ़ाई वर्ष में एक माह बढ़ जाता है। (त्रिलोकसार, 410)

30. चन्द्रादिक विमानों के वाहक देवों का आकार कैसा है एवं वे किस-किस दिशा में गमन करते हैं ?

पूर्व दिशा में सिंह, दक्षिण दिशा में हाथी, पश्चिम दिशा में बैल और उत्तर दिशा में घोड़े के आकार वाले देव अपने-अपने विमानों को ढोते हैं। चन्द्र एवं सूर्य को ढोने वाले एक दिशा में 4000, चारों दिशाओं में कुल 16000 देव होते हैं। शेष विमानों में एक दिशा में 2000 एवं चारों दिशाओं में कुल 8000 देव होते हैं। किन्तु नक्षत्रों में एक दिशा में 1000 एवं चारों दिशाओं में कुल 4000 देव होते हैं तथा ताराओं में एक दिशा में 500 एवं चारों दिशाओं में कुल 2000 देव होते हैं। आभियोग्य जाति के देव विमान ढोते हैं, अतः वे ही गज आदि बनते हैं। (त्रिलोकसार, 343)

31. मनुष्य लोक में सूर्य-चन्द्रमा आदि कितने-कितने हैं ?

द्वीप-समुद्र	सूर्य	चन्द्रमा	ग्रह	नक्षत्र
जम्बू द्वीप	2	2	176	56
लवण समुद्र	4	4	352	112
धातकी खण्ड	12	12	1056	336
कालोदधि	42	42	3696	1176
पुष्करार्थ	72	72	6336	2016
कुल	132	132	11616	3696

अढ़ाई द्वीप में तो ज्योतिषी देवों की संख्या संख्यात है, किन्तु सम्पूर्ण तिर्यक् लोक में ज्योतिषी देवों की संख्या असंख्यात है।

32. एक चन्द्रमा का परिवार कितना है ?

एक चन्द्रमा के परिवार में एक सूर्य¹, 28 नक्षत्र, 88 ग्रह एवं 66,975 कोड़ाकोड़ी तारे हैं। (त्रि.सा., 362)

33. एक सूर्य जम्बूद्वीप की पूर्ण प्रदक्षिणा कितने दिन में करता है ?

दो दिन (दिन-रात) में करता है।

34. एक चन्द्रमा जम्बूद्वीप की पूर्ण प्रदक्षिणा कितने दिन में करता है ?

दो दिन से (दिन-रात) अधिक समय लगता है, इसी से चन्द्रोदय में हीनाधिकता आती है।

35. अमावस्या और पूर्णिमा क्या है ?

राहु प्रतिदिन 1-1 पथ में चन्द्रमंडल के 16 भागों में से 1-1 कला (भाग) को आच्छादित करता हुआ

1. सर्वार्थसिद्धि 4/14 विशेषार्थ

क्रम से 15 कला पर्यन्त आच्छादित करता है। इस प्रकार अंत में जिस मार्ग में चन्द्र की केवल 1 कला दिखाई देती है। वह अमावस्या है। प्रतिपदा के दिन से वह राहु 1-1 वीथी में गमन विशेष से 1-1 कला को छोड़ता जाता है। जिसके कारण 1 दिन चन्द्र बिम्ब परिपूर्ण दिखता है, वह पूर्णिमा है। अथवा चन्द्र बिम्ब स्वभाव से ही 15 दिनों तक कृष्ण कांति स्वरूप और इतने ही दिनों तक शुक्ल कांति स्वरूप परिणमता है। (त्रिलोकसार, 342 विशेषार्थ)

36. उत्तरायन और दक्षिणायन क्या है ?

जब सूर्य प्रथम गली में रहता है, तब श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है और जब वह अन्तिम गली में पहुँचता है तब उत्तरायन प्रारम्भ होता है। श्रावण माह से पौष माह तक (183 दिन) सूर्य दक्षिणायन तथा माघ माह से आषाढ माह तक (183 दिन) उत्तरायन रहता है। (त्रि. सा., 412)

37. सूर्य और चन्द्रमा की कितनी-कितनी गलियाँ हैं ?

सूर्य की 184 गलियाँ हैं और इसी क्षेत्र में चन्द्रमा की 15 गलियाँ हैं। इनमें ये दोनों गमन करते हैं।

38. जब सूर्य प्रथम गली में आता है तो क्या होता है ?

जब सूर्य प्रथम गली में आता है तब अयोध्या नगर के भीतर अपने भवन के ऊपर से चक्रवर्ती सूर्य विमान में स्थित जिनबिम्ब के दर्शन करता है। चक्रवर्ती की चक्षु इन्द्रिय का विषय $47263\frac{7}{20}$ योजन अर्थात् 18,90,53,400 मील प्रमाण है। (त्रिलोकसार, 391)

39. सूर्य और चन्द्रमा एक-एक मिनट में कितना गमन करते हैं ?

प्रथम मार्ग में सूर्य एक मिनट में $4, 37, 623\frac{11}{18}$ मील प्रमाण गमन करता है एवं प्रथम मार्ग में चन्द्रमा एक मिनट में $4,22,796\frac{31}{1647}$ मील प्रमाण गमन करता है। (त्रिलोकसार, 388, विशेषार्थ)

40. क्या पृथ्वी घूमती है ?

नहीं। सूर्य और चन्द्रमा सुमेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं। सुमेरु पर्वत अर्थात् पृथ्वी स्थित है एवं सूर्य चन्द्रमा उसकी प्रदक्षिणा करते हैं।

41. क्या सभी ज्योतिषी मंडल गमन करते हैं ?

अढ़ाईद्वीप और दो समुद्र में अर्थात् समस्त मनुष्य लोक में पाँचों प्रकार के ज्योतिषी देव निरन्तर गमन करते रहते हैं। मनुष्य लोक से बाहर के सभी ज्योतिषी देव स्थित रहते हैं। (तत्त्वार्थसूत्र, 4/13/15)

42. दिन छोटे-बड़े कैसे होते हैं ?

जब सूर्य अभ्यन्तर वीथी (प्रथम वीथी) में भ्रमण करता है, तब दिन 18 मुहूर्त का (14 घंटा 24 मिनट) और रात्रि 12 मुहूर्त (9 घंटा 36 मिनट) की होती है तथा बाह्य (अंतिम) वीथी में भ्रमण करता है, तब 18 मुहूर्त की रात्रि और 12 मुहूर्त का दिन होता है। श्रावण माह में सूर्य अभ्यन्तर वीथी में भ्रमण करता है। माघ मास में सूर्य सबसे बाह्य वीथी में भ्रमण करता है। (त्रिलोकसार, 379)

43. क्या सूर्य और चन्द्रमा की गति घटती-बढ़ती है ?

हाँ। सूर्य और चन्द्रमा की प्रथम वीथी में हाथीवत् (अतिमंद), मध्यम वीथी में घोड़े की चाल समान (मध्यम गति) और बाह्य वीथी में सिंह सदृश (तेज गति) गति है। (त्रिलोकसार, 388)

1. सर्वार्थसिद्धि 4/14 विशेषार्थ

44. **क्या सभी ज्योतिषी विमानों की गति एक-सी है ?**
 नहीं। चन्द्रमा सबसे मंद गति वाला है, इससे शीघ्रगति सूर्य की, सूर्य से शीघ्र गति ग्रहों की, ग्रहों से शीघ्र गति नक्षत्रों की और उससे भी अधिक शीघ्र गति ताराओं की है। (त्रिलोकसार, 403)
45. **सूर्य का ताप कहाँ तक फैलता है ?**
 सूर्य का ताप सुदर्शन मेरु के मध्य भाग से लेकर लवण समुद्र के छठवे भाग तक फैलता है तथा सूर्य बिम्ब से चित्रा पृथ्वी 800 योजन नीचे है और 1000 योजन चित्रा पृथ्वी की जड़ हैं सूर्य का ताप नीचे की ओर 1800 योजन अर्थात् 72,00000 मील तक फैलता है। सूर्य बिम्ब से ऊपर 100 योजन पर्यन्त ज्योतिर्लोक है। अतः सूर्य का ताप ऊपर की ओर 100 योजन (4,00,000 मील) दूर तक फैलता है।¹
46. **चन्द्र और सूर्य का गमन क्षेत्र कितना है ?**
 चन्द्र और सूर्य के गमन करने को चार क्षेत्र कहते हैं। दो चन्द्र और दो सूर्य के प्रति 1-1 चार क्षेत्र होता है। जम्बूद्वीप के दो सूर्यों का एक चार क्षेत्र है। लवण समुद्र के चार सूर्यों के 2 चार (संचार) क्षेत्र, धातकीखण्ड द्वीप के 12 सूर्यों के 6 चार क्षेत्र हैं, कालोदधि समुद्र के 42 सूर्यों के 21 चार क्षेत्र हैं और पुष्करार्धद्वीप के 72 सूर्यों के 36 चार क्षेत्र हैं। जम्बूद्वीप सम्बन्धी चन्द्र और सूर्य जम्बूद्वीप में तो 180 योजन प्रमाण क्षेत्र में ही विचरते हैं और शेष $330^{48}/_{61}$ प्रमाण क्षेत्र लवण समुद्र में विचरते हैं। अर्थात् 2-2 चन्द्र और सूर्य $180+330^{48}/_{61} = 510^{48}/_{61}$ योजन प्रमाण क्षेत्र में विचरते हैं। शेष पुष्करार्ध पर्यन्त के चन्द्र और सूर्य अपने-अपने क्षेत्र में विचरते हैं। (त्रिलोकसार, 374-375)
47. **दिन-रात कैसे होते हैं ?**
 सूर्य जब सुमेरु पर्वत के पूर्व-पश्चिम में होता है तब पूर्व विदेह एवं पश्चिम विदेह क्षेत्र में दिन एवं भरत-ऐरावत क्षेत्र में रात्रि होती है एवं जब सूर्य सुमेरु पर्वत के दक्षिण में होता है, तब भरत-ऐरावत क्षेत्र में दिन एवं विदेह क्षेत्र में रात्रि होती है।
48. **ऊर्ध्वलोक कितने राजू में है एवं वहाँ क्या-क्या है ?**
 मध्यलोक के सुमेरु पर्वत की चूलिका से एक बाल की मोटाई प्रमाण स्थान के बाद स्वर्ग प्रारम्भ हो जाते हैं। चित्रा पृथ्वी से 1.5 राजू में सौधर्म-ऐशान स्वर्ग आमने-सामने हैं। 1.5 राजू में सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में लान्तव-कापिष्ठ स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में शुक्र-महाशुक्र स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में शतार-सहस्रार स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में आनत-प्राणत स्वर्ग हैं। 1/2 राजू में आरण-अच्युत स्वर्ग हैं। ये सभी स्वर्ग आमने-सामने हैं। इस प्रकार 6 राजू में 16 स्वर्ग हैं तथा 16 स्वर्गों के ऊपर 1 राजू में 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश, 5 अनुत्तर विमान एवं सिद्ध शिला भी है। इस प्रकार 7 राजू में ऊर्ध्व लोक एवं 7 राजू में अधोलोक हैं। इस तरह लोक की ऊँचाई कुल 14 राजू है।
नोट- सुमेरु पर्वत की ऊँचाई ऊर्ध्वलोक में ही गर्भित है। (त्रिलोकसार, 458)
49. **स्वर्गों के विमानों का आधार क्या है ?**
 सौधर्म युगल के विमान घनस्वरूप जल के ऊपर तथा सानत्कुमार युगल के विमान पवन (हवा) के ऊपर स्थित है। ब्रह्मादि चार कल्प जल व वायु दोनों के ऊपर तथा आनत-प्राणत आदि शेष विमान शुद्ध

1. त्रिलोकसागर, 397

आकाश में स्थित है। (ति.प., 8/206-207)

50. सिद्धालय कहाँ है ?

सर्वार्थसिद्धि विमान के ध्वजदण्ड से 12 योजन ऊपर जाकर अष्टम ईषत् प्राग्भार नामक पृथ्वी के बीचोंबीच 45 लाख योजन गोल एवं 8 योजन मध्य में मोटी चाँदी एवं स्वर्ण के सदृश और नाना रत्नों से परिपूर्ण सिद्ध शिला है। जो आगे-आगे क्रमशः कम होती हुई अंत में 1 अंगुल प्रमाण रह जाती है। वह उत्तान धवल छत्र के सदृश है। ईषत्प्राग्भार नामक अष्टम पृथ्वी की चौड़ाई (पूर्व-पश्चिम) एक राजू, लम्बाई (उत्तर-दक्षिण) सात राजू तथा मोटाई (ऊँचाई) आठ योजन प्रमाण है। (ति.प., 8/675-681) इस पृथ्वी के ऊपर 3 वातवलय हैं, जो क्रमशः 2 कोस (4000 धनुष) 1 कोस (2000 धनुष) और 1575 धनुष मोटे हैं अंतिम वातवलय के ऊपरी भाग में 525 धनुष की उत्कृष्ट अवगाहना को आदि लेकर 3.5 हाथ की अवगाहना तक के सिद्ध परमेष्ठी विराजमान रहते हैं।

51. सिद्धक्षेत्र का विस्तार कितना है ?

मनुष्य क्षेत्र प्रमाण 45,00,000 योजन है।

52. त्रस नाली कितनी लंबी, चौड़ी एवं ऊँची है ?

लोक के मध्य भाग में एक राजू लंबी, एक राजू चौड़ी और कुछ कम तेरह राजू ऊँची त्रसनाली है। लोकनाड़ी चौदह राजू है जिसमें एक राजू कलकला नामक स्थावर लोक है, इसमें त्रस जीव नहीं रहते हैं एवं सप्तम पृथ्वी के मध्य भाग में नारकी रहते हैं। नीचे $3999 \frac{1}{3}$ योजन अर्थात् $3,19,94,666 \frac{2}{3}$ धनुष में त्रस जीव नहीं हैं। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धि विमान से ईषत् प्राग्भार का अंतर 12 योजन अर्थात् 96,000 धनुष है एवं ईषत् प्राग्भार की मोटाई 8 योजन अर्थात् 64,000 धनुष है एवं तीनों शिखरवर्ती वातवलय 2 कोस (4000 धनुष) 1 कोस (2000 धनुष) एवं 1575 धनुष इस क्षेत्र में त्रस जीव नहीं रहते (समुद्धघात एवं उपपाद¹ को छोड़कर) हैं।

$3,19,94,666 \frac{2}{3}$ धनुष + 96,000 धनुष + 64,000 धनुष + 7575 धनुष = $3,21,62,241 \frac{2}{3}$ धनुष कम 13 राजू ऊँची त्रस नाली है। (ति.प., 2/6-7)

53. सुमेरु पर्वत और नंदीश्वर द्वीप की विशेषताएँ बताइए।

सुमेरु पर्वत

यह मध्यलोक का सर्वप्रथम पर्वत है - विदेह क्षेत्र के बहुमध्य भाग में स्थित स्वर्ण वर्ण व कूटाकार पर्वत है, यह जम्बूद्वीप में एक, धातकीखण्ड में दो और पुष्कार्ध द्वीप में दो पर्वत हैं कुल 5 सुमेरु पर्वत हैं, इसमें प्रत्येक में 16-16 चैत्यालय हैं कुल मिलाकर 80 चैत्यालय हैं, जिसमें 8, 640 प्रतिमाएँ हैं।

यह पर्वत तीर्थङ्करों के जन्माभिषेक का आसन रूप माना जाता है।

सुमेरु पर्वत की ऊँचाई 1 लाख 40 योजन है। सुमेरु पर्वत की जड़ 1000 योजन है, इसके ऊपर भद्रशाल वन, नन्दन वन, सौमनस वन और पाण्डुक वन है, पाण्डुक वन के मध्य से सुमेरु पर्वत की चोटी (चूलिका) प्रारम्भ होती है जो 40 योजन है, उस चोटी की ईशान दिशा में पाण्डुक शिला, आग्नेय में पाण्डुकम्बला, नैऋत्य में रक्ता और वायव्य में रक्त कम्बला शिला है जो अर्द्धचन्द्राकार है, इनमें क्रमशः

1. त्रय पर्याय में जन्म लेने वाले

भरत, पश्चिम विदेह, ऐरावत तथा पूर्व विदेह के सर्व तीर्थङ्करों का देव जन्माभिषेक करते हैं। इसी प्रकार धातकीखण्ड द्वीप में पूर्व तथा पश्चिम दिशा में विजय और अचल नामक दो मेरु हैं तथा पुष्करद्वीप में पूर्व तथा पश्चिम दिशा में मंदर और विद्युन्माली नामक दो मेरु हैं। इन पर अकृत्रिम चैत्यालयों की रचना, सुमेरु (सुदर्शन मेरु) के समान ही है। विशेषता इतनी है कि इन पर्वतों में प्रत्येक की ऊँचाई 84,000 योजन है।

नन्दीवर द्वीप

इस मध्यलोक में असंख्यात द्वीप व समुद्र हैं जिसमें 7 द्वीप और 7 समुद्र के बाद आठवाँ द्वीप नन्दीश्वर द्वीप है। इस द्वीप की पूर्व दिशा में एक अंजनगिरि नामक काले रंग का पर्वत है, उसके चारों ओर एक लाख योजन छोड़कर चार वापियाँ हैं, प्रत्येक वापी के चारों दिशाओं में अशोक, सप्तपर्ण, चम्पक और आम्र नामक 4 वन हैं, इस द्वीप की एक दिशा में 16 और चारों दिशाओं में कुल 64 वन हैं, प्रत्येक वापी के मध्य में सफेद रंग वाला दधिमुख नाम का एक-एक पर्वत है, प्रत्येक वापी के चारों कोनों पर लाल रङ्ग के 4 रतिकर पर्वत हैं। अभ्यन्तर रतिकरों पर देव क्रीड़ा करते हैं एवं बाह्य रतिकरों पर जिनमन्दिर हैं। इस प्रकार एक दिशा में 1 अंजनगिरि, 4 दधिमुख एवं 8 रतिकर पर्वत हैं, इनके ऊपर 13 अकृत्रिम चैत्यालय हैं, इसी प्रकार शेष तीन दिशाओं में भी 13-13 चैत्यालय हैं, अतः नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी 52 अकृत्रिम चैत्यालय हैं, प्रत्येक मंदिर में 108 जिनबिम्ब स्तनों के हैं। देवी-देवताओं के मन को आकर्षित करने वाली 500 धनुष की पद्यासन प्रतिमाएँ हैं, उनके नाखून, चेहरा लाल, आँखें काली और सफेद, भौंह काली, सिर के बाल काले शोभा देते हैं, मुख मुद्रा ऐसी लगती है, जैसे पापों को हरण करने वाली दिव्यध्वनि खिरती है, स्तनमयी प्रतिमा में करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा की भी आभा उन प्रतिमाओं के प्रकाश के आगे फीकी पड़ जाती है, जो महावैराग्य परिणाम वाले हैं, वे उनके दर्शन करते हैं, वे प्रतिमाएँ बोलती नहीं हैं, उन्हें देखकर ही सम्यग्दर्शन हो जाता है उन सुख देने वाली प्रतिमाओं को नमस्कार करते हैं। सौधर्म इन्द्र आदि देवगण अष्टाह्निका पर्व में अपने परिवार सहित इन चैत्यालयों का अभिषेक-पूजन करने आते हैं।

पूर्व दिशा में कल्पवासी देव, दक्षिण दिशा में भवनवासी देव, पश्चिम दिशा में व्यन्तर देव तथा उत्तर दिशा में ज्योतिषी देव भक्ति-भाव से पूजन करते हैं। मनुष्य वहाँ नहीं जा सकते हैं, वे यहाँ पर ही जिनालयों में नन्दीश्वर द्वीप के जिनालयों की स्थापना कर पूजन करते हैं।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. एक गिलास उल्टी, दूसरी सीधी एवं तीसरी उल्टी रखने से लोक का आकार बनता है।
2. कलकला पृथ्वी में मात्र निगोदिया जीव रहते हैं।
3. प्रथम पृथ्वी 1,80,000 योजन मोटी नहीं है।
4. पञ्चम पृथ्वी से पञ्चम स्वर्ग की ऊँचाई 7.5 राजू है।
5. लोक के बाहर सिद्ध परमेष्ठी रहते हैं।
6. सर्वार्थसिद्धि विमान शुद्ध आकाश के आधार से नहीं है।

7. यहाँ से चन्द्र विमान 880 योजन ऊपर है।
8. कालोदधि में 1176 नक्षत्र नहीं हैं।
9. चन्द्रमा के परिवार में सूर्य भी आता है।
10. चन्द्रमा के ढोने वाले देवों में पूर्व दिशा में हाथी रहता है।

अन्यत्र खोजिए-

1. लोक में किन-किन जीवों का कहाँ-कहाँ आवास है एवं पञ्च पैताले का क्या अर्थ है ?
2. किन-किन अवस्थाओं में त्रस जीव त्रस नाली के बाहर पाए जाते हैं ?
3. दूसरे प्रकार से भरत क्षेत्र का विस्तार जम्बूद्वीप का 190 वाँ भाग किस प्रकार से होता है ?
4. कलकला को 8 वीं पृथ्वी क्यों कहा है ?
5. 343 घनराजू लोक का क्षेत्रफल किस प्रकार से होता है ?